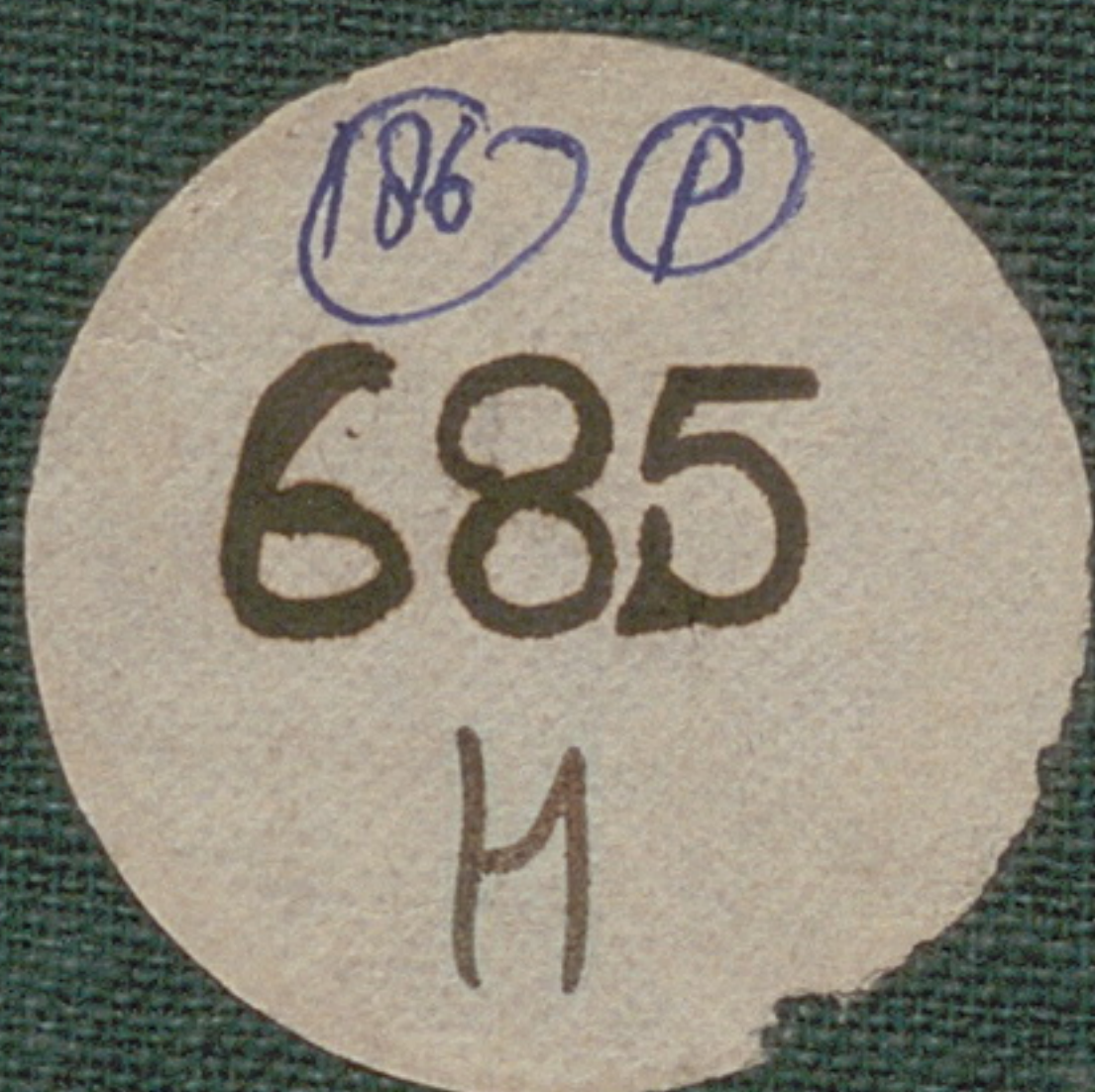




1867 P

685

H

2 ✓
1911

891.431
S1 64 R

RECEIVED.
30 MAR. 1931

685

॥ ओ ३ म् ॥

* वन्देमातरम् *

राष्ट्रीय सावन बहार

[कजली]

लेखक :—

डाक्टर प्रसिद्धनारायण सिन्हा "प्रसिद्ध"

(एच० एम० डी०)

खुटहन-जौनपुर निवासी ।

प्रकाशक—

स्वाधीन-साहित्य-मण्डल, खुटहन,

ज़िला जौनपुर यू० पी० ।

मुद्रक—

सेवा प्रेस, जौनपुर ।

प्रथम बार

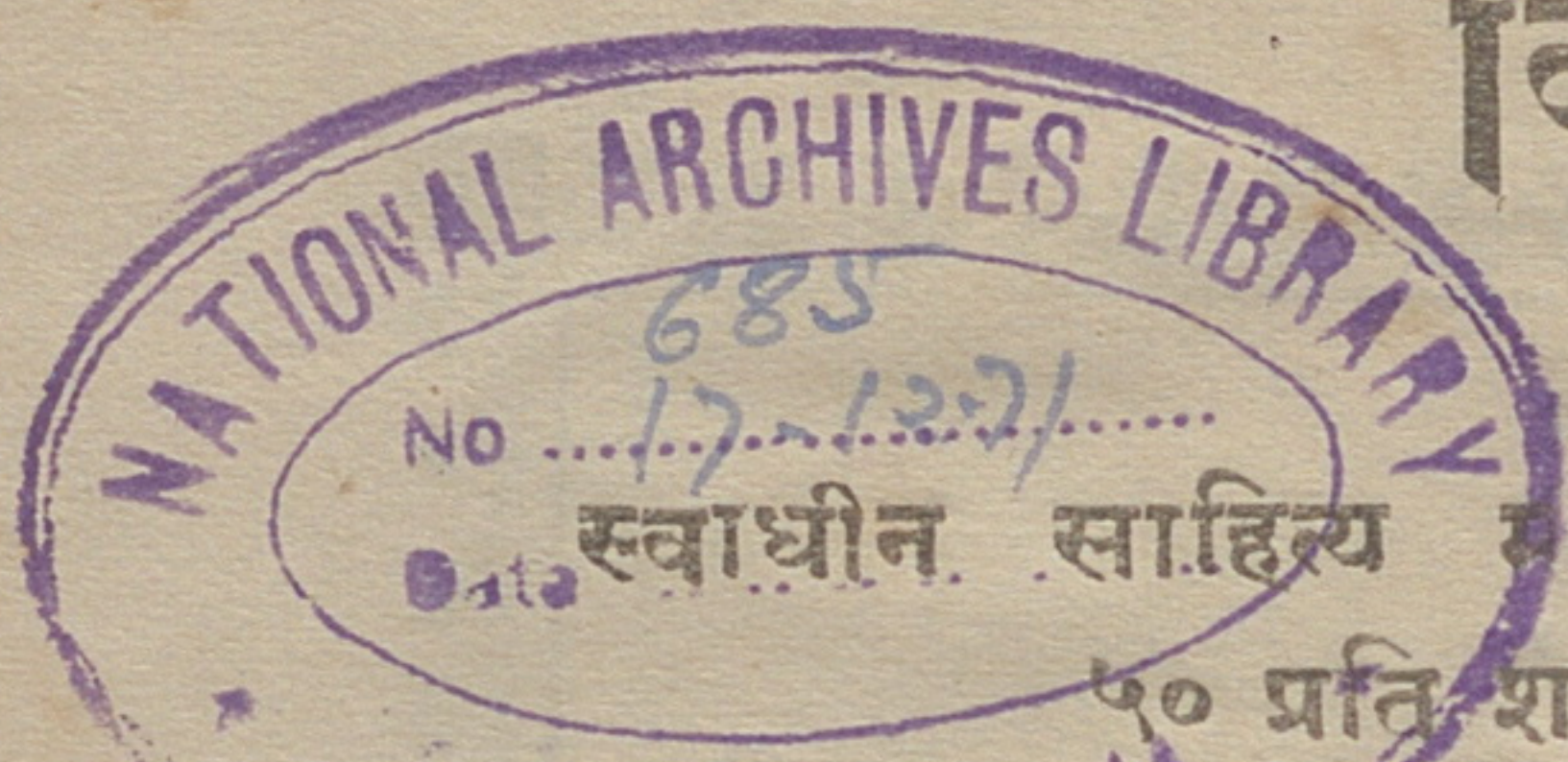
सन् १९३० ई०

सं० १६८७ वि०

मूल्य)।।।

तीन पैसा

॥ सर्वाधिकार स्वरक्षित ॥



विज्ञापन

नं० १

स्वाधीन साहित्य मण्डल से थोक माल लेने वालों को ५० प्रतिशत कमीशन दिया जायगा।

१—राष्ट्रीय हाहाकार भजनावली, एक प्रति का मू० -)॥

२—राष्ट्रीय सावन बहार (कजली) एक प्रति का दाम)॥

नोट—१०० पुस्तकों से कम नहीं भेजी जायँगी तथा थोक लेने वालों को आधा दाम पेशगी भेजना होगा।

पुस्तकें मिलने का पता—स्वाधीन-साहित्य-मण्डल,
मु० पो० खुटहन जिला जौनपुर (यू० पी०)

नं० २

तिजारी (जूड़ीबुखार) की शर्तिया दवा।

तिजारी जिसको बनारस के आस पास के जिलों में जूड़ी कहते हैं तथा चौथिया, अन्तरा इत्यादि जो जाड़ा लेकर बोखार अधिकतर कार या कार्तिक के महीनों में होता है इत्यादि रोग इस दवा के सेवन करने से शीघ्र दूर हो जाते हैं। कृपया एक बार अवश्य आजमाइये।

कीमत एक शीशी दवा की १) डाक खर्च अलग

नोट—एक रुपये से कम दाम की दवा नहीं भेजी जायगी विशेष बात जानने के लिये नीचे के पते से पत्र व्यवहार कीजिये।

दवा मिलने का पता—

डा० पी० एन० सिन्हा एण्ड ब्रादर्स

मु० पो० खुटहन जिला जौनपुर (यू. पी.)

* राष्ट्रीय सावन बहार *

कजली १

ईश्वर प्रार्थना

प्रभु अब पार करो भारत की नैया आन पड़ी मजधार ॥ टेक ॥
 पार ब्रह्म परमेश्वर हो तुम ईश्वर जगदाधार ॥
 सुन लो हम भारत वासिन के कष्ट अनेक अपार ॥
 भूकों मरें किसान देश के गउवें करत पुकार ॥
 विधवाओं को आहें सुनकर होत कलेजा क्षार ॥
 लुप्त हुई सब कला देश की नष्ट हुआ व्यापार ॥
 सूई तक भी नहीं बनाने का हम को अधिकार ॥
 जुल्म करत है रावण से भी अधिक ब्रिटिश सरकार ।
 भेज दिया धन लूट हमारा सात समुन्दर पार ॥
 भारत के नेताओं पर होता है डण्ड प्रहार ॥
 हम निशस्त्र सहते मशीनगन औ तोपों की मार ॥
 किसी समय यां दूध दही के बहते थे नद नार ॥
 इसी हिन्द में आज बहत है नित प्रति खूँ की धार ॥
 तेरी बनाई चीज़ में सब का है समान अधिकार ।
 तिस पर भी नहिं खाने पाते हम मिट्टी नुनखार ॥
 यही हिन्द जो किसी समय था सब जग का सरदार ॥
 कहलाता ग़लाम दुनियां में है अब यह करतार ॥
 दया दृष्टि से दुःखी देश को अब तुम लेहु निहार ॥

बना हुआ है भारत का अब स्वराज्य प्राण-अधार ॥
 दीन दुखी धन हीन भारती बनगै सब मुरदार ॥
 पराधीनता के फन्दों से करो शीघ्र निस्तार ॥
 अर्जुन से द्वापर में तुमने की थी जो यक्रार ॥
 दीनानाथ आपने उसको क्यों है दिया बिसार ॥
 प्रभु "प्रसिद्ध" की विनती यह तुम करो शीघ्र स्वीकार ॥
 नाश करन हित दुष्टों का अब जल्दी लो अवतार ॥

—रचयिता डा०-प्रसिद्ध नारायण सिन्हा "प्रसिद्ध"

कजली २

गान्धी महत्व

गान्धी तू सच मुच हिन्दी की है शान रे सांवलिया ।
 संसार की मानव जाती का अभिमान रे सांवलिया ॥टेका॥
 तू सत्य, अहिंसा, दया, शान्ति, निस्वार्थ, त्याग का है ब्रतधारी
 हम भारतीय नहि बल्की जाने यह मनुष्य सब संसारी ॥
 इन्हीं गुणों से है तू सच भगवान रे सांवलिया ॥
 राम कृष्ण थे महापुरुष जाने केवल हिन्दुस्तानी ।
 जानत तुम्हको अमरीकन, अफरीकन, औ सब जापानी
 बस तुहीं एक है जग का पुरुष महान रे सांवलिया ॥
 तेरे भाषण में है वह गुण जो सब को प्रिय होजाता है ।
 तू दोस्त सभी जाती का है हरदिल अजीज कहलाता है ॥
 हैवान भी तेरा दरश कर भये इन्सान रे सांवलिया ॥
 उधर तुपक संगीन सहित बन्दूकें औ तलवारें हैं ।
 इधर अहिंसा मयी सैन्य को तेरी खड़ी कतारें हैं ॥
 हुये विदेशी सब तुम्ह से हैरान रे सांवलिया ॥

चरखा चक्र सुदर्शन तेरा लगे चलाने कायर भी ।
जिसके भय से कांप उठे मैन्चिस्टर लंकाशायर भी ॥
“प्रसिद्ध” नहिं कर सके तेरा गुण गान रे सांवलिया ॥

—रचयिता डा० प्र० ना० सिन्हा “प्रसिद्ध”

कजली ३

गान्धी का अवतार

हरि हरि गान्धी का भये भारत में अवतारा रे हरी ॥टेक॥
गान्धी जी तू भारत मां की आंखों का है तारा रामा ।
हरे रामा मोती लाल जवाहिर फूल हज़ारा रे हरी ॥
सिर्फ हिन्द का नहीं बल्कि तू दुनियां का है प्यारा रामा
हरे रामा हिन्दी करते तुझ पर तन मन बारा रे हरी ॥
रावण, राम से, कंस, कृष्ण से जैसे पहले हारा रामा
हरे रामा है गांधी गवर्नमेण्ट का वही नज़ारा रे हरी ॥
चरखा, तकली ये दोनों ही हैं तेरे हथियारा रामा ।
हरे रामा है तुझ से हैरान ब्रिटिश सरकारा रे हरी ॥
है “प्रसिद्ध” हम तैंतिस कोटि को बार बार धिकारा रामा
हरे रामा तुझ सा साधू सेवत कारागारा रे हरी ॥

—रचयिता डा० प्र० ना० सिन्हा “प्रसिद्ध”

कजली ४

कृषक क्रन्दन

गांधी बाबा हमरो दुखवा सुनि लो तुम्हरे लागौं पायँ ॥टेक॥
सघवा मेंजड़वन हमरे मोहवे औ हम सब थर्रायँ ॥

जेठवा के घमवा में उखिया सिंचत खन बैल हमार जरि जायँ ॥
 एतनी बिपतिया से हमनी किसान सब जरि मरि अन्न कमायँ ॥
 तिस पर हम भूखन रहते हैं लूट विदेसिये खायँ ॥
 मघवा औ पुसवा के दिनवां तो हमनी के संगवा खाय बिति जाय ॥
 सवना भदउवां में भुखिया के मारे लरिका सब चिल्लायँ ॥
 सत्तर हजार गायें नित हमरी भारत में कटि जायँ ॥
 सहस तीस तो गोरवे ही सब खाकर के डकरायँ ॥
 लगभग छत्तिस कोटि रूपये भूमि टेक्स लगि जायँ ॥
 हों 'प्रसिद्ध' हम सुखी आज यदि गोरे सब भगि जायँ ॥
 -रचयिता डा० प्र० ना० सिन्हा "प्रसिद्ध"

कजली ५

प्रतिज्ञा

अब हम चरखा चलइबै अरे सावनवां ॥ टेक ॥
 मनवां बोवइबै, रूई उपजइबै, धुनियां से रुइया धुनइबै अरे०
 बढ़ई बोलाइ चरखा बनवइबै, दिन रात सुतवा कतइबै अरे०
 खट्टर सुदेसी सब को पहिनइबै, कपड़े विदेशी जलइबै अरे०
 जात करोड़न लादि जो बिदेसवा में, धन हम अपना बचइबै अरे०
 करके सुदेसिया के अब परचार हम भारत बन्दी छोड़इबै अरे०
 कहत 'प्रसिद्ध' नाहीं डर जेलखनवा के, देश हित गरवाकटइबै अरे०
 -रचयिता डा० प्र० ना० सिन्हा "प्रसिद्ध"

कजली नं० ६

विदेशियों के प्रति

कवने मद में भुलाना रे परदेशी ॥ टेक ॥
 आये नादिर, औ तैमूर, अहमददुरानी से शूर ।
 आया गज़नी सुलताना रे परदेशी ॥

कंसासुर था अति बलवान, रावण विजयी विश्वमहान ।
हो गये यां से सब रचाना रे परदेशी ॥

आया तू करने व्यापार, बन बैठा भारत सरकार ।
छोड़ के तर्ज ताजिराना रे परदेशी ॥

खाकर के तू नमक हमार, भूल गया क्यों ऐ बदकार ।
करता जुल्म ज़ालिमाना रे परदेशी ॥

हम सब हैंगे बे हथियार, करता तू हम पर क्यों बार ।
कर दे बन्द जुल्म ढाना रे परदेशी ॥

चाहे कर दे तू बरबाद, आखिर होंगे हम आज़ाद ।
भर कर तेरा जेलखाना रे परदेशी ॥

कहता "प्रसिद्ध" तुझे पुकार विस्तर बांध के हो तैयार ।
होगा लंदन तुझे जाना रे परदेशी ॥

—रचयिता डा० प्र० ना० सिन्हा "प्रसिद्ध"

कजली नं० ७

स्त्रियों से अपील

अब तो कातो मिल कर चर्खा तुम सब भारत नारी ना ॥टेका॥
जब से छोड़ दियो तुम चरखा पहिरि विदेशी सारी ना ॥
तब से जात विदेश अधिक धन भारत भयो भिखारी ना ॥
पहनो खदूर बहनो अब तुम देहु विदेशी ज़ारी ना ॥
यदि तुम ऐसा नहि करिहौ तो भारत होय दुखारी ना ॥
वस्त्र विदेशी बेचेंगे अब तो नौकर सरकारी ना ॥
लेना मत बहिनो तुम उसको चाहे फिरहु उधारी ना ॥
करदो मिलकर सत्याग्रह की अब तुम भी तय्यारी ना ॥
तुम बिन नहीं "प्रसिद्ध" होय अब भारत मातु सुखारी ना ॥

रचयिता डा० प्र० ना० सिन्हा "प्रसिद्ध"

महात्मा जी की ११ शर्तें

- (१) नशीली चीजों का क्रय-विक्रय बिलकुल बन्द किया जाय;
- (२) विनियम को दर १ शि० ४ पेन्स कर दी जाय;
- (३) जमीन का लगान घटा कर कम कर दिया जाय तथा यह विभाग व्यवस्थापक सभा के आधीन कर दिया जाय;
- (४) नमक कर उठा दिया जाय;
- (५) फौजी खर्च शुरू में कम से कम ५० फी सदी घटा दिया जाय;
- (६) बड़ी २ तनख्वाह पाने वाले अधिकारियों की तनख्वाह, घटाई गई मालगुजारी के अनुसार कम कर के आधी या उससे कुछ कम कर दी जाय;
- (७) देशी कपड़े के व्यापार की उन्नति को दृष्टि से विदेशी कपड़े पर और भी महसूल बढ़ाये जायँ;
- (८) समुद्री तट का व्यापार सिर्फ भारतीयों के ही आधीन हो;
- (९) जिन्हें हत्या करने या हत्या की चेष्टा के लिए सजा हुई है, उनके सिवा सभी राजनैतिक कैदों छोड़ दिये जायँ, सभी राजनैतिक मामले उठा लिये जायँ, भारतीय दंड विधान की दफा १२४ ए० (राजद्रोह), १८१८ का रेगुलेशन तथा ऐसी अन्य दफाएं उठा दी जायँ और भारत के निर्वासित सभी आदमियों को यहाँ आने दिया जाय;
- (१०) खुफिया पुलिस विभाग उठा दिया जाय या उस पर जनता का अधिकार रहे;
- (११) आत्म रक्षा के निमित्त लोगों को बन्दूक, पिस्तौल आदि रखने का अधिकार हो ।